

ब्रह्मावर्त पी जी कॉलेज मंथना कानपुर

हिंदी विभाग

एम ए प्रथम सेमेस्टर

तृतीय प्रश्न-पत्र

प्राचीन एवं मध्यकालीन काव्य

सत्र 2026-27

प्रश्न 1. विद्यापति के काव्य में शृंगार भावना का विवेचन कीजिए।

उत्तर:

विद्यापति को मैथिली तथा हिंदी के मध्यकालीन काव्य का प्रमुख शृंगारिक कवि माना जाता है। उनके पदों में प्रेम की अनुभूति अत्यंत स्वाभाविक, मधुर और मार्मिक रूप में व्यक्त हुई है। उनके शृंगार में राधा-कृष्ण के प्रेम के माध्यम से मानवीय प्रेम की विभिन्न अवस्थाओं का चित्रण मिलता है। संयोग और वियोग दोनों पक्षों को उन्होंने प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है।

विद्यापति के प्रेम में सौंदर्य-बोध के साथ भावनात्मक गहराई भी दिखाई देती है। नायिका की लज्जा, उत्सुकता, मिलन की आकांक्षा, मान, विरह तथा प्रिय के प्रति समर्पण का अत्यंत सुंदर चित्रण मिलता है। उनकी भाषा कोमल, मधुर और संगीतात्मक है। प्रकृति भी उनके प्रेम-वर्णन में सहायक बनती है।

विद्यापति का शृंगार केवल बाहरी सौंदर्य तक सीमित नहीं है, बल्कि उसमें हृदय की अनुभूतियों का सूक्ष्म चित्रण है। इसी कारण उनके पदों में प्रेम की सार्वभौमिक अनुभूति दिखाई देती है। उनके काव्य में भाव, भाषा और संगीत का सुंदर समन्वय है।

प्रश्न 2. विद्यापति के पदों में विरह-वेदना का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

विद्यापति के पदों में विरह-वेदना अत्यंत मार्मिक रूप में व्यक्त हुई है। प्रिय से बिछुड़ने पर नायिका की मानसिक अवस्था, बेचैनी, स्मृति और मिलन की उत्कट इच्छा का उन्होंने सूक्ष्म चित्रण किया है। विरहिणी के लिए प्रिय की अनुपस्थिति जीवन को नीरस बना देती है। वह प्रिय के आने की प्रतीक्षा करती रहती है और उसके वियोग में समय अत्यंत कठिन प्रतीत होता है।

विद्यापति ने विरह की अनेक मनोवैज्ञानिक अवस्थाओं को व्यक्त किया है। कभी नायिका प्रिय की स्मृतियों में खो जाती है, कभी उसके आगमन की कल्पना करती है और कभी अपनी पीड़ा को सखी के सामने व्यक्त करती है। उसके लिए प्रकृति का सौंदर्य भी आनंददायक न रहकर विरह को और बढ़ा देता है।

विद्यापति की विरह-वेदना में भावुकता और स्वाभाविकता है। भाषा की मधुरता तथा पदों की गेयता इस पीड़ा को और प्रभावशाली बनाती है। इस प्रकार विद्यापति ने विरह को प्रेम की गहनता व्यक्त करने वाला माध्यम बनाया है।

प्रश्न 3. विद्यापति के काव्य की भाषा और शैली की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

विद्यापति के काव्य की भाषा मुख्यतः मैथिली है, जिसमें लोकभाषा की मधुरता और सहजता दिखाई देती है। उनके पदों में संस्कृत तथा अन्य भाषाओं के शब्द भी मिलते हैं, लेकिन उनकी अभिव्यक्ति सरल और भावपूर्ण रहती है। भाषा में संगीतात्मकता उनकी सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक है।

उनकी शैली चित्रात्मक, भावात्मक और गेय है। प्रेम की सूक्ष्म अनुभूतियों को वे छोटे-छोटे पदों में अत्यंत प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करते हैं। उपमा, रूपक, अनुप्रास आदि अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग मिलता है। प्रकृति के माध्यम से भावों को अधिक प्रभावशाली बनाया गया है।

विद्यापति की शैली में कृत्रिमता नहीं है। उनकी भाषा पात्रों और परिस्थितियों के अनुकूल बदलती है। नायिका की भावनाओं को व्यक्त करते समय भाषा में कोमलता और मधुरता आ जाती है। इसी कारण उनके पद आज भी गेय और लोकप्रिय हैं।

इस प्रकार विद्यापति की भाषा में सरलता, मधुरता, संगीतात्मकता और भावाभिव्यक्ति की शक्ति प्रमुख हैं।

प्रश्न 4. विद्यापति के पदों में नारी-मन का चित्रण कीजिए।

उत्तर:

विद्यापति के पदों में नारी-मन का अत्यंत सूक्ष्म और स्वाभाविक चित्रण हुआ है। उनकी नायिका केवल सौंदर्य की प्रतीक नहीं है, बल्कि वह भावनाओं से युक्त स्वतंत्र व्यक्तित्व रखती है। उसके मन में प्रेम, लज्जा, उत्सुकता, मान, संकोच, विरह और मिलन की आकांक्षा जैसी अनेक भावनाएँ दिखाई देती हैं।

प्रिय के आगमन की सूचना से उसका हृदय प्रसन्न हो जाता है, जबकि प्रिय के दूर चले जाने पर वह अत्यंत व्याकुल हो जाती है। वह अपनी सखी से मन की बातें कहती है और उसके माध्यम से अपनी भावनाएँ व्यक्त करती है। नायिका का यह मनोवैज्ञानिक चित्रण विद्यापति की बड़ी उपलब्धि है।

विद्यापति ने नारी की भावनाओं को बाहरी दृष्टि से नहीं, बल्कि उसकी आंतरिक अनुभूति के स्तर पर प्रस्तुत किया है। इसलिए उनके पदों में नारी-मन का चित्रण अत्यंत जीवंत लगता है। प्रेम की कोमल अनुभूतियों को व्यक्त करने में उनकी सफलता उन्हें मध्यकालीन प्रेम-काव्य का महत्वपूर्ण कवि बनाती है।

प्रश्न 5. 'कीर्तिलता' अथवा विद्यापति के साहित्यिक योगदान का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर:

विद्यापति मध्यकालीन भारतीय साहित्य के अत्यंत महत्वपूर्ण कवि हैं। उनका साहित्य मुख्यतः प्रेम, श्रृंगार, भक्ति और मानवीय अनुभूतियों से संबंधित है। उन्होंने मैथिली भाषा को साहित्यिक

प्रतिष्ठा प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उनके पदों की लोकप्रियता केवल किसी एक क्षेत्र तक सीमित नहीं रही।

उनकी रचनाओं में तत्कालीन समाज और संस्कृति की झलक भी मिलती है। प्रेम की विभिन्न अवस्थाओं को उन्होंने अत्यंत सूक्ष्मता से व्यक्त किया। उनके काव्य में भाव और संगीत का सुंदर मेल है। इसी कारण उनके पद लोकजीवन और संगीत परंपरा में भी लोकप्रिय हुए।

विद्यापति के साहित्य में संस्कृत की विद्वत्ता और लोकभाषा की सहजता का सुंदर समन्वय मिलता है। उनका प्रभाव आगे चलकर हिंदी के भक्त और श्रृंगारिक कवियों पर भी दिखाई देता है।

इस प्रकार विद्यापति केवल प्रेम के कवि नहीं हैं, बल्कि भाषा, भाव और संगीत के कुशल कलाकार हैं। मध्यकालीन भारतीय साहित्य में उनका स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 6. 'पृथ्वीराज रासो' के कवि चंदबरदाई का साहित्यिक परिचय दीजिए।

उत्तर:

चंदबरदाई को परंपरागत रूप से 'पृथ्वीराज रासो' का रचयिता माना जाता है। वे वीरगाथा परंपरा के प्रमुख कवियों में गिने जाते हैं। उनका काव्य तत्कालीन राजपूत वीरता, युद्ध, स्वाभिमान और राजनिष्ठा की भावना को अभिव्यक्त करता है।

'पृथ्वीराज रासो' में पृथ्वीराज चौहान के जीवन, युद्धों और शौर्य का वर्णन किया गया है। चंदबरदाई ने अपने आश्रयदाता के वीर चरित्र को अत्यंत प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया। युद्ध के प्रसंगों में ओजपूर्ण भाषा तथा वीर रस का प्रभाव दिखाई देता है।

उनकी काव्य-शैली में अतिशयोक्ति, वर्णनात्मकता और उत्साह प्रमुख हैं। तत्कालीन वीर संस्कृति, सामंती व्यवस्था और राजपूत मर्यादा का प्रभाव उनके काव्य में स्पष्ट दिखाई देता है।

यद्यपि 'पृथ्वीराज रासो' के वर्तमान रूप और ऐतिहासिक प्रामाणिकता को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं, फिर भी हिंदी की वीरगाथा परंपरा में इसका साहित्यिक महत्व निर्विवाद है।

प्रश्न 7. 'पृथ्वीराज रासो' में वीर रस की अभिव्यक्ति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

'पृथ्वीराज रासो' वीरगाथा काव्य की प्रमुख रचना है। इसमें वीर रस की अभिव्यक्ति युद्ध, पराक्रम, स्वाभिमान और शौर्य के विभिन्न प्रसंगों के माध्यम से हुई है। पृथ्वीराज को एक साहसी और पराक्रमी राजा के रूप में प्रस्तुत किया गया है।

युद्ध के दृश्यों में कवि ने सैनिकों के उत्साह, शस्त्रों की टकराहट, रणभूमि की स्थिति तथा वीरों की निर्भीकता का प्रभावपूर्ण वर्णन किया है। शत्रु के सामने न झुकना और मातृभूमि तथा स्वाभिमान की रक्षा करना वीरता का प्रमुख आदर्श है।

भाषा में ओज और गति वीर रस को प्रभावशाली बनाते हैं। अतिशयोक्ति का प्रयोग भी वीर चरित्र को महान बनाने के लिए किया गया है। युद्ध-वर्णन में ध्वनि और क्रिया-प्रधान शब्दों का प्रयोग पाठक के मन में उत्साह पैदा करता है।

इस प्रकार 'पृथ्वीराज रासो' में वीर रस केवल युद्ध का वर्णन नहीं है, बल्कि तत्कालीन वीर संस्कृति और सम्मान-बोध का प्रतिनिधित्व करता है।

प्रश्न 8. आदिकालीन काव्य की प्रमुख प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:

हिंदी साहित्य के आदिकाल को सामान्यतः वीरगाथा काल भी कहा जाता है। इस काल के साहित्य में वीरता, युद्ध, राजाश्रय, धार्मिक भावना और लोकजीवन की अनेक विशेषताएँ दिखाई देती हैं।

इस काल की प्रमुख प्रवृत्ति वीर रस है। कवियों ने अपने आश्रयदाता राजाओं के शौर्य और युद्ध-कौशल का वर्णन किया। राजपूत वीरों की प्रतिष्ठा, स्वाभिमान और युद्ध-परंपरा का प्रभाव साहित्य पर

स्पष्ट है। दूसरी ओर सिद्ध, नाथ और जैन साहित्य में धार्मिक एवं आध्यात्मिक चिंतन भी मिलता है।

आदिकालीन साहित्य में लोकभाषाओं का विकास हुआ। भाषा में अपभ्रंश, अवहट्ट तथा विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों के रूप दिखाई देते हैं। रचनाओं में वर्णनात्मकता और अतिशयोक्ति का प्रयोग अधिक है।

इस काल में धार्मिक, वीर और श्रृंगारिक प्रवृत्तियाँ समानांतर रूप से विकसित हुईं। इसलिए आदिकाल हिंदी साहित्य के विकास की आधारभूमि माना जाता है।

इकाई-2 : निर्गुण भक्तिकाव्य — कबीर

प्रश्न 9. कबीर के निर्गुण ब्रह्म की अवधारणा स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

कबीर निर्गुण भक्ति धारा के प्रमुख संत कवि हैं। उनके अनुसार परमात्मा निराकार, निर्गुण और सर्वव्यापी है। वह किसी एक मूर्ति, मंदिर या धार्मिक स्थान तक सीमित नहीं है। कबीर ने ईश्वर को अनुभव का विषय माना है, केवल बाहरी कर्मकांड का नहीं।

उनके अनुसार ईश्वर मनुष्य के भीतर ही विद्यमान है। इसलिए उसे प्राप्त करने के लिए बाहरी आडंबर छोड़कर आत्मज्ञान और सच्ची साधना आवश्यक है। कबीर ने राम, हरि, साहब आदि अनेक नामों का प्रयोग परम सत्य के लिए किया, लेकिन उनका राम दशरथ-पुत्र के रूप में सीमित नहीं है।

कबीर की निर्गुण भक्ति में गुरु का भी विशेष महत्व है। गुरु व्यक्ति को आत्मज्ञान का मार्ग दिखाता है और माया तथा अज्ञान से मुक्त करता है।

इस प्रकार कबीर का निर्गुण ब्रह्म निराकार, सर्वव्यापक और अनुभवगम्य है। उनकी भक्ति मनुष्य को बाहरी भेदभाव से ऊपर उठकर आत्मिक सत्य की ओर ले जाती है।

प्रश्न 10. कबीर की सामाजिक चेतना का विवेचन कीजिए।

उत्तर:

कबीर केवल भक्त कवि ही नहीं, बल्कि जागरूक समाज-सुधारक भी थे। उन्होंने अपने समय की सामाजिक कुरीतियों, जातिगत भेदभाव, धार्मिक पाखंड और बाहरी आडंबर का तीखा विरोध किया। उनका मानना था कि मनुष्य की श्रेष्ठता जाति या धर्म से नहीं, बल्कि उसके कर्म और आचरण से निर्धारित होती है।

कबीर ने हिंदू और मुस्लिम दोनों समाजों में मौजूद रूढ़ियों की आलोचना की। उन्होंने मंदिर-मस्जिद, मूर्ति-पूजा और कर्मकांड के बाहरी रूपों की अपेक्षा आंतरिक शुद्धता को महत्व दिया।

उनकी वाणी में व्यंग्य और विरोध का स्वर स्पष्ट है, लेकिन इसका उद्देश्य समाज में विद्वेष फैलाना नहीं बल्कि मनुष्य को सच्चे धर्म और मानवता की ओर ले जाना था।

कबीर समानता, प्रेम और भाईचारे के समर्थक थे। उन्होंने जाति-पाँति के भेद को अस्वीकार किया। उनकी सामाजिक चेतना आज भी महत्वपूर्ण है क्योंकि वह व्यक्ति को स्वतंत्र विचार, आत्मज्ञान और मानवीय समानता का संदेश देती है।

प्रश्न 11. कबीर की भाषा की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

कबीर की भाषा को सामान्यतः 'सधुक्कड़ी' या पंचमेल भाषा कहा जाता है। इसमें विभिन्न क्षेत्रीय बोलियों तथा लोकभाषाओं के शब्दों का समावेश मिलता है। उनकी भाषा किसी एक क्षेत्र की सीमाओं में बंधी हुई नहीं है।

कबीर ने अपनी बात को सरल और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करने के लिए लोकप्रचलित शब्दों, मुहावरों और प्रतीकों का प्रयोग किया। उनकी भाषा में अरबी-फारसी, ब्रज, अवधी, भोजपुरी आदि के शब्द भी मिलते हैं।

उनकी भाषा की सबसे बड़ी विशेषता उसकी सीधी और चोट करने वाली अभिव्यक्ति है। वे कठिन आध्यात्मिक विचारों को भी सामान्य जीवन के उदाहरणों से समझाते हैं। व्यंग्य, विरोधाभास, प्रतीक और उलटबाँसी उनकी शैली को विशिष्ट बनाते हैं।

कबीर की भाषा में विद्वत्ता का प्रदर्शन नहीं बल्कि अनुभव की प्रामाणिकता है। इसी कारण उनकी वाणी सामान्य जनता तक आसानी से पहुँची। उनकी भाषा लोकजीवन से जुड़ी हुई और अत्यंत प्रभावशाली है।

प्रश्न 12. कबीर की गुरु-भक्ति का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

कबीर के काव्य में गुरु का स्थान अत्यंत महत्वपूर्ण है। उनके अनुसार गुरु ही वह व्यक्ति है जो साधक को अज्ञान से ज्ञान की ओर ले जाता है। संसार के मोह, माया और भ्रम से बाहर निकलकर परम सत्य का अनुभव कराने में गुरु की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। कबीर ने गुरु को ईश्वर की प्राप्ति का माध्यम माना है। गुरु साधक को बाहरी आडंबरों से हटाकर आत्मचिंतन की ओर प्रेरित करता है। गुरु की शिक्षा से व्यक्ति अपने भीतर स्थित परमात्मा को पहचान पाता है।

कबीर की गुरु-भक्ति अंधानुकरण पर आधारित नहीं है। उनके लिए सच्चा गुरु वही है जो व्यक्ति को सत्य का ज्ञान दे और उसके भीतर विवेक पैदा करे।

कबीर की वाणी में गुरु के प्रति श्रद्धा के साथ ज्ञान का महत्व भी दिखाई देता है। इस प्रकार उनके काव्य में गुरु केवल धार्मिक व्यक्ति नहीं बल्कि आत्मज्ञान का मार्गदर्शक हैं। गुरु-तत्त्व उनकी निर्गुण साधना का महत्वपूर्ण आधार है।

प्रश्न 13. कबीर ने माया को किस प्रकार चित्रण किया है?

उत्तर:

कबीर के काव्य में माया संसार के मोह और आसक्ति का प्रतीक है। उनके अनुसार मनुष्य धन, परिवार, पद, प्रतिष्ठा और भौतिक सुखों में इतना उलझ जाता है कि अपने वास्तविक स्वरूप और परमात्मा को भूल जाता है। यही मोह माया कहलाता है।

कबीर ने माया को अत्यंत शक्तिशाली माना है। वह मनुष्य को सत्य से दूर करती है और उसे सांसारिक आकर्षणों में बाँध देती है।

माया का संबंध केवल धन से नहीं बल्कि अहंकार, लोभ, मोह और स्वार्थ से भी है।

कबीर का उद्देश्य संसार का पूर्ण त्याग करना नहीं बल्कि उसके मोह से मुक्त होना है। मनुष्य संसार में रहते हुए भी सत्य, प्रेम और आत्मज्ञान का मार्ग अपना सकता है।

इस प्रकार कबीर की माया संबंधी अवधारणा मनुष्य को आत्मचिंतन के लिए प्रेरित करती है। वे बताते हैं कि बाहरी संपत्ति से अधिक महत्वपूर्ण आंतरिक ज्ञान और आत्मिक शांति है।

प्रश्न 14. कबीर की उलटबाँसियों की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

उलटबाँसी कबीर की काव्य-अभिव्यक्ति की विशिष्ट शैली है। इसमें कवि ऐसी बातें कहता है जो पहली दृष्टि में विरोधाभासी या असंभव लगती हैं, लेकिन उनके भीतर गहरा आध्यात्मिक अर्थ छिपा होता है।

कबीर ने उलटबाँसियों के माध्यम से सामान्य तर्क से परे आध्यात्मिक अनुभवों को व्यक्त किया। इन कथनों का उद्देश्य पाठक को चौंकाना और उसे बाहरी अर्थ से आगे बढ़कर आंतरिक अर्थ खोजने के लिए प्रेरित करना है।

उनकी उलटबाँसियों में प्रतीकात्मकता, रहस्यात्मकता और विरोधाभास प्रमुख हैं। सांसारिक भाषा के माध्यम से आध्यात्मिक सत्य को व्यक्त करना इसकी प्रमुख विशेषता है।

उलटबाँसी कबीर के चिंतन की मौलिकता को दर्शाती है। इससे उनकी कविता में रहस्य और बौद्धिक चुनौती दोनों उत्पन्न होते हैं। इस शैली के माध्यम से कबीर ने आत्मज्ञान और ब्रह्मानुभूति जैसे कठिन विषयों को अनोखे ढंग से प्रस्तुत किया है।

प्रश्न 15. कबीर के काव्य में प्रेम का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

कबीर के काव्य में प्रेम साधना का अत्यंत महत्वपूर्ण आधार है। उनके लिए सच्चा प्रेम केवल सांसारिक आकर्षण नहीं बल्कि आत्मा

और परमात्मा के संबंध का प्रतीक है। प्रेम के माध्यम से मनुष्य अहंकार, भेदभाव और स्वार्थ से मुक्त होता है।

कबीर के प्रेम में समर्पण आवश्यक है। सच्चा प्रेम व्यक्ति को भीतर से बदल देता है। प्रेम करने वाला व्यक्ति जाति, धर्म, ऊँच-नीच और बाहरी पहचान से ऊपर उठकर मानवता को स्वीकार करता है।

कबीर ने प्रेम को केवल शब्दों में नहीं बल्कि जीवन के अनुभव के रूप में देखा। उनका प्रेम ज्ञान और भक्ति दोनों से जुड़ा है। ज्ञान व्यक्ति को सत्य का बोध कराता है और प्रेम उसे उस सत्य से जोड़ता है।

इस प्रकार कबीर के काव्य में प्रेम आध्यात्मिक अनुभव, मानवतावादी दृष्टि और सामाजिक समानता का आधार है। यही प्रेम उनकी निर्गुण भक्ति को व्यापक मानवीय अर्थ प्रदान करता है।
प्रश्न 16. कबीर के काव्य में पाखंड-विरोध की भावना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:

कबीर अपने समय के धार्मिक पाखंड और बाहरी आडंबरों के प्रबल विरोधी थे। उन्होंने ऐसे धार्मिक कर्मकांडों की आलोचना की जिनमें आत्मिक शुद्धता और नैतिकता का अभाव था। उनका मानना था कि केवल बाहरी वेशभूषा, पूजा-पाठ या धार्मिक प्रतीकों से ईश्वर की प्राप्ति नहीं हो सकती।

उन्होंने हिंदू और मुस्लिम दोनों समुदायों के पाखंडों पर प्रश्न उठाए। मंदिर और मस्जिद दोनों के बाहरी रूपों की अपेक्षा उन्होंने मनुष्य के हृदय में स्थित ईश्वर को महत्व दिया।

कबीर की आलोचना का उद्देश्य किसी धर्म का अपमान करना नहीं बल्कि धर्म के वास्तविक मानवीय स्वरूप को स्थापित करना था। वे सत्य, प्रेम, सदाचार और आत्मज्ञान को सच्ची धार्मिकता मानते थे।

उनकी भाषा में व्यंग्य और तीखापन इसलिए आता है क्योंकि वे समाज को झकझोरना चाहते थे। पाखंड-विरोध कबीर की सामाजिक चेतना और निर्गुण भक्ति का महत्वपूर्ण पक्ष है।

प्रश्न 17. कबीर के काव्य में मानवतावादी दृष्टिकोण स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

कबीर का काव्य मूलतः मानवतावादी है। उन्होंने मनुष्य को जाति, धर्म, वर्ग और बाहरी पहचान के आधार पर विभाजित करने का विरोध किया। उनके अनुसार सभी मनुष्यों में एक ही परम तत्त्व विद्यमान है। इसलिए किसी व्यक्ति को ऊँचा या नीचा समझना उचित नहीं है।

कबीर ने सामाजिक समानता, प्रेम और भाईचारे का संदेश दिया। उन्होंने व्यक्ति को अपने भीतर झाँकने और अपने दोषों को पहचानने की प्रेरणा दी। उनका मानववाद केवल विचार नहीं बल्कि व्यवहार से जुड़ा हुआ है।

कबीर के लिए सच्चा धर्म वही है जो मनुष्य को मनुष्य से जोड़ता है। धार्मिक पहचान के आधार पर संघर्ष करने के बजाय प्रेम और सह-अस्तित्व का मार्ग अपनाना चाहिए।

उनकी वाणी में सामाजिक रूढ़ियों के विरुद्ध संघर्ष और मानव-मर्यादा की स्थापना दोनों दिखाई देते हैं। इस कारण कबीर का काव्य मध्यकालीन समाज से आगे निकलकर व्यापक मानवीय मूल्यों की स्थापना करता है।

प्रश्न 18. कबीर की काव्य-कला की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

कबीर की काव्य-कला अनुभव और अभिव्यक्ति दोनों की दृष्टि से विशिष्ट है। उन्होंने दोहा, साखी, सबद और उलटबाँसी जैसे रूपों का प्रयोग किया। उनकी कविता में गहन आध्यात्मिक विचारों के साथ लोकजीवन की सहज भाषा दिखाई देती है।

उनकी शैली में व्यंग्य, प्रतीक, रूपक, विरोधाभास और संवादात्मकता प्रमुख हैं। वे कठिन विचारों को साधारण उदाहरणों से स्पष्ट करते हैं। उनकी कविता में कथन की तीव्रता और संक्षिप्तता विशेष प्रभाव उत्पन्न करती है।

कबीर की काव्य-कला में लोकानुभव और आध्यात्मिक अनुभव का सुंदर समन्वय है। उनकी भाषा में संगीतात्मकता भी दिखाई देती है। वे पाठक को केवल भावुक नहीं करते बल्कि सोचने के लिए भी प्रेरित करते हैं।

इस प्रकार कबीर की कविता में सरलता, प्रभावशीलता, व्यंग्य, प्रतीकात्मकता और सामाजिक चेतना का अद्भुत मेल है। यही विशेषताएँ उन्हें हिंदी निर्गुण भक्ति काव्य का प्रमुख कवि बनाती हैं।

प्रश्न 19. कबीर के काव्य में जाति-विरोधी चेतना पर विचार कीजिए।

उत्तर:

कबीर ने जाति-व्यवस्था और ऊँच-नीच के भेद का स्पष्ट विरोध किया। उनके अनुसार मनुष्य की श्रेष्ठता जन्म से नहीं बल्कि उसके ज्ञान, कर्म और आचरण से निर्धारित होती है। उन्होंने सामाजिक व्यवस्था में व्याप्त जातिगत अहंकार को मानवता के लिए बाधक माना।

कबीर स्वयं अनुभव और आत्मज्ञान को महत्व देते हैं। उनके लिए सभी मनुष्य एक ही परम सत्ता की संतान हैं। इसलिए जन्म के आधार पर किसी को श्रेष्ठ और किसी को निम्न मानना तर्कसंगत नहीं है।

उनकी वाणी में जातिगत भेदभाव के विरुद्ध तीखा व्यंग्य मिलता है। वे व्यक्ति को बाहरी पहचान छोड़कर अपने भीतर स्थित सत्य को पहचानने की प्रेरणा देते हैं।

कबीर की जाति-विरोधी चेतना उनके व्यापक मानवतावाद का हिस्सा है। उनका उद्देश्य सामाजिक समानता और मानवीय

सम्मान की स्थापना था। इस दृष्टि से उनकी वाणी मध्यकालीन समाज में परिवर्तनकारी चेतना का प्रतिनिधित्व करती है।

प्रश्न 20. कबीर के काव्य में ज्ञान और भक्ति का संबंध स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

कबीर के अनुसार ज्ञान और भक्ति एक-दूसरे के विरोधी नहीं बल्कि परस्पर पूरक हैं। भक्ति के माध्यम से व्यक्ति परमात्मा के प्रति प्रेम और समर्पण विकसित करता है, जबकि ज्ञान उसे अपने वास्तविक स्वरूप का बोध कराता है।

कबीर बाहरी धार्मिक ज्ञान की अपेक्षा आत्मज्ञान को महत्व देते हैं। केवल पुस्तकीय ज्ञान से सत्य की प्राप्ति संभव नहीं है। व्यक्ति को अपने भीतर झाँककर अहंकार, माया और अज्ञान को समाप्त करना चाहिए।

उनकी निर्गुण भक्ति ज्ञान पर आधारित है। भक्त जब यह समझता है कि परमात्मा उसके भीतर ही विद्यमान है, तब बाहरी भेदभाव और आडंबर समाप्त होने लगते हैं।

इस प्रकार कबीर की भक्ति विवेकपूर्ण और अनुभवपरक है। ज्ञान भक्ति को सही दिशा देता है और भक्ति ज्ञान को जीवन में उतारती है। दोनों के समन्वय से आत्मिक मुक्ति का मार्ग प्रशस्त होता है।

इकाई-3 : जायसी — 'नागमती वियोग खंड'

प्रश्न 21. 'नागमती वियोग खंड' में विरह-वेदना का चित्रण कीजिए।

उत्तर:

जायसी के 'पद्मावत' के नागमती वियोग खंड में विरह-वेदना का अत्यंत मार्मिक चित्रण मिलता है। रत्नसेन के वियोग में नागमती का जीवन अत्यंत दुखमय हो जाता है। वह अपने प्रिय की स्मृतियों में डूबी रहती है और उसके लौटने की प्रतीक्षा करती है।

नागमती की पीड़ा केवल व्यक्तिगत दुख नहीं है, बल्कि वह विरहिणी नारी के सार्वभौमिक अनुभव का प्रतिनिधित्व करती है।

प्रकृति का प्रत्येक दृश्य उसके विरह को और गहरा करता है। वर्षा, पवन, पक्षी और वनस्पतियाँ सभी उसे प्रिय की याद दिलाते हैं।

जायसी ने नागमती के मन की सूक्ष्म अवस्थाओं को अत्यंत स्वाभाविक भाषा में व्यक्त किया है। उसके अकेलेपन, चिंता और प्रतीक्षा में करुण रस का प्रभाव दिखाई देता है।

नागमती वियोग खंड की सबसे बड़ी विशेषता उसकी मनोवैज्ञानिक सच्चाई है। जायसी ने विरह को केवल रोने या दुख व्यक्त करने तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे प्रेम की गहराई का प्रमाण बनाया है।

प्रश्न 22. जायसी के 'नागमती वियोग खंड' में प्रकृति-चित्रण की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

'नागमती वियोग खंड' में प्रकृति का चित्रण अत्यंत भावपूर्ण है। जायसी ने प्रकृति को केवल बाहरी दृश्य के रूप में प्रस्तुत नहीं किया बल्कि उसे नागमती की मानसिक स्थिति से जोड़ दिया है। विरहिणी के लिए प्रकृति का प्रत्येक तत्व प्रिय की याद दिलाता है।

पवन, वर्षा, बादल, पक्षी, वृक्ष और ऋतुएँ उसके विरह के सहभागी बन जाते हैं। प्रकृति का आनंदमय वातावरण भी नागमती के लिए पीड़ादायक हो जाता है। इस प्रकार बाहरी प्रकृति और आंतरिक मनःस्थिति के बीच गहरा संबंध स्थापित होता है।

जायसी का प्रकृति-चित्रण मानवीकरण पर आधारित है। प्रकृति नागमती के दुख को समझती हुई प्रतीत होती है। इस कारण विरह का प्रभाव और अधिक गहरा हो जाता है।

उनके प्रकृति-वर्णन में लोकजीवन की सहजता तथा भावनात्मकता है। प्रकृति केवल सजावट नहीं बल्कि कथानक और भावाभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण साधन बन जाती है।

प्रश्न 23. नागमती के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

नागमती 'पद्मावत' की अत्यंत महत्वपूर्ण नारी पात्र है। उसके चरित्र में प्रेम, पतिव्रता, त्याग, विरह और समर्पण की भावनाएँ प्रमुख हैं। रत्नसेन के प्रति उसका प्रेम गहरा और आत्मीय है। पति के वियोग में उसका जीवन अत्यंत कष्टपूर्ण हो जाता है।

नागमती की सबसे बड़ी विशेषता उसकी प्रेम-निष्ठा है। वह अपने प्रिय की प्रतीक्षा में दुख सहती है, लेकिन उसके प्रति उसके मन में कोई दुर्भावना नहीं आती। उसकी पीड़ा के माध्यम से जायसी ने स्त्री के भावनात्मक संसार को अभिव्यक्ति दी है।

नागमती का चरित्र केवल करुणा उत्पन्न करने वाला नहीं है। उसमें आत्मसम्मान और भावनात्मक दृढ़ता भी दिखाई देती है। उसका विरह प्रेम की गहराई को प्रमाणित करता है।

इस प्रकार नागमती भारतीय साहित्य की प्रमुख विरहिणी नायिकाओं में स्थान रखती है। उसका चरित्र जायसी की मनोवैज्ञानिक दृष्टि और भावाभिव्यक्ति की क्षमता का सुंदर उदाहरण है।

प्रश्न 24. 'नागमती वियोग खंड' में करुण रस की अभिव्यक्ति स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

'नागमती वियोग खंड' करुण रस की दृष्टि से अत्यंत प्रभावशाली है। रत्नसेन से बिछड़ने के कारण नागमती के हृदय में जो पीड़ा उत्पन्न होती है, वही पूरे प्रसंग का मूल भाव है। उसका अकेलापन, प्रतीक्षा और प्रिय की स्मृति पाठक के मन में करुणा उत्पन्न करती है।

जायसी ने नागमती की मानसिक अवस्था को प्रकृति के माध्यम से भी व्यक्त किया है। आनंददायक ऋतुएँ भी उसके लिए दुख का कारण बन जाती हैं। प्रिय की अनुपस्थिति में संसार का कोई भी सुख उसे आकर्षित नहीं करता।

भाषा सरल और भावपूर्ण है। विरहिणी के विलाप में कृत्रिमता नहीं है। इसी कारण करुण रस स्वाभाविक रूप से उत्पन्न होता है।

नागमती की पीड़ा केवल व्यक्तिगत नहीं बल्कि प्रेम-वियोग की सार्वभौमिक पीड़ा है। इसीलिए यह प्रसंग हिंदी साहित्य के श्रेष्ठ विरह-वर्णनों में माना जाता है।

प्रश्न 25. जायसी के काव्य में प्रेम और विरह का संबंध स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

जायसी के काव्य में प्रेम और विरह का अत्यंत गहरा संबंध है। उनके अनुसार प्रेम की वास्तविक गहराई का अनुभव अक्सर वियोग में होता है। 'पद्मावत' में नागमती और रत्नसेन के संबंध के माध्यम से प्रेम की इसी अनुभूति को व्यक्त किया गया है।

विरह प्रेम को कमजोर नहीं करता बल्कि उसे अधिक तीव्र बनाता है। प्रिय की अनुपस्थिति में उसकी स्मृति और अधिक गहरी हो जाती है। नागमती के मन में रत्नसेन के प्रति प्रेम वियोग के कारण अत्यंत तीव्र हो जाता है।

जायसी ने विरह के माध्यम से प्रेम की मानसिक और आध्यात्मिक शक्ति को दिखाया है। प्रेम व्यक्ति को त्याग, धैर्य और समर्पण की ओर ले जाता है।

इस प्रकार जायसी के काव्य में विरह प्रेम का विरोध नहीं बल्कि उसकी गहन अवस्था है। यही कारण है कि 'नागमती वियोग खंड' प्रेम और करुणा दोनों की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।

प्रश्न 26. 'पद्मावत' की काव्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए।

उत्तर:

'पद्मावत' मलिक मोहम्मद जायसी की प्रसिद्ध प्रेमाख्यानक कृति है। इसकी प्रमुख विशेषता प्रेम कथा के माध्यम से आध्यात्मिक और सांकेतिक अर्थों की अभिव्यक्ति है। रत्नसेन, पद्मावती, नागमती और अलाउद्दीन जैसे पात्रों के माध्यम से कथा आगे बढ़ती है।

जायसी ने अवधी भाषा का प्रभावशाली प्रयोग किया है। भाषा में लोकजीवन की सहजता और काव्यात्मकता दोनों हैं। दोहा और चौपाई जैसे छंदों का सुंदर प्रयोग मिलता है।

कृति में शृंगार, करुण और वीर रस के साथ प्रकृति-चित्रण तथा मनोवैज्ञानिक भावाभिव्यक्ति भी मिलती है। विशेष रूप से नागमती का वियोग-वर्णन अत्यंत मार्मिक है।

‘पद्मावत’ की एक प्रमुख विशेषता इसका प्रतीकात्मक स्वरूप है। प्रेम और साधना को एक-दूसरे से जोड़कर जायसी ने काव्य को व्यापक अर्थ प्रदान किया। इस प्रकार ‘पद्मावत’ मध्यकालीन हिंदी प्रेमाख्यानक साहित्य की महत्वपूर्ण रचना है।

प्रश्न 27. जायसी की भाषा-शैली का परिचय दीजिए।

उत्तर:

जायसी की भाषा मुख्यतः अवधी है। उन्होंने लोकभाषा का प्रयोग करते हुए अत्यंत सरल और प्रभावशाली अभिव्यक्ति प्रस्तुत की। उनकी भाषा में लोकजीवन से जुड़े शब्द, मुहावरे और प्रतीक मिलते हैं।

जायसी की शैली कथात्मक और भावात्मक दोनों है। कथा को आगे बढ़ाने के लिए दोहा-चौपाई शैली का प्रयोग किया गया है। वहीं भावनात्मक प्रसंगों में भाषा अत्यंत कोमल और मार्मिक हो जाती है।

उनकी भाषा में उपमा, रूपक, मानवीकरण आदि अलंकारों का स्वाभाविक प्रयोग मिलता है। प्रकृति के माध्यम से मनोभावों को व्यक्त करने की उनकी क्षमता विशेष उल्लेखनीय है।

जायसी की भाषा में लोक और साहित्य का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। इसी कारण उनका काव्य सामान्य पाठक के लिए भी सहज है और साहित्यिक दृष्टि से भी समृद्ध है।

प्रश्न 28. जायसी के ‘नागमती वियोग’ की साहित्यिक महत्ता बताइए।

उत्तर:

‘नागमती वियोग’ हिंदी साहित्य में विरह-वर्णन की श्रेष्ठ परंपरा का प्रतिनिधित्व करता है। जायसी ने नागमती के माध्यम से एक ऐसी विरहिणी स्त्री का चित्रण किया है जिसकी पीड़ा व्यक्तिगत होते हुए भी सार्वभौमिक बन जाती है।

इस प्रसंग में प्रेम, करुणा, प्रकृति और मनोविज्ञान का सुंदर समन्वय हुआ है। नागमती के दुख को प्रकृति के विभिन्न रूपों से जोड़कर जायसी ने भावों को व्यापक बना दिया है।

भाषा अत्यंत सहज, मार्मिक और संगीतात्मक है। प्रकृति का मानवीकरण तथा प्रतीकात्मक प्रयोग प्रसंग को प्रभावशाली बनाता है।

नागमती का वियोग यह स्पष्ट करता है कि प्रेम केवल मिलन का आनंद नहीं बल्कि बिछोह की पीड़ा भी है। इस दृष्टि से यह प्रसंग मध्यकालीन हिंदी काव्य की महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

इकाई-4 : सगुण भक्तिकाव्य — सूरदास

प्रश्न 29. सूरदास के काव्य में वात्सल्य रस का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

सूरदास को वात्सल्य रस का सर्वश्रेष्ठ कवि माना जाता है। उन्होंने बालकृष्ण की बाल-लीलाओं का अत्यंत स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। यशोदा और कृष्ण के संबंध में माता के स्नेह, चिंता, ममता और दुलार की सुंदर अभिव्यक्ति मिलती है। बालकृष्ण की चंचलता, शरारत, रूठना, खेलना, माखन चोरी करना तथा माता से शिकायत करना आदि प्रसंग अत्यंत जीवंत हैं। सूरदास ने बाल-मनोविज्ञान को इतनी सूक्ष्मता से चित्रित किया है कि कृष्ण एक दिव्य देवता न होकर सामान्य बालक जैसे दिखाई देते हैं।

यशोदा के माध्यम से मातृत्व की सार्वभौमिक भावना व्यक्त हुई है। कृष्ण की छोटी-छोटी शरारतों पर यशोदा का क्रोध भी प्रेम से भरा है।

सूरदास के वात्सल्य-वर्णन में भाषा, भाव और चित्रात्मकता का सुंदर समन्वय है। इसी कारण उन्हें हिंदी साहित्य में वात्सल्य रस का अप्रतिम कवि माना जाता है।

प्रश्न 30. सूरदास के काव्य में बाल-कृष्ण की बाल-लीलाओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

सूरदास के काव्य में बाल-कृष्ण की लीलाओं का अत्यंत आकर्षक चित्रण मिलता है। कृष्ण का माखन चुराना, गोपियों को परेशान करना, ग्वाल-बालों के साथ खेलना, माता यशोदा से रूठना और अपनी भोली बातों से सबको प्रसन्न करना प्रमुख बाल-लीलाएँ हैं।

सूरदास ने इन लीलाओं में बाल-मनोविज्ञान को अत्यंत स्वाभाविक रूप में प्रस्तुत किया है। कृष्ण कभी शरारती दिखाई देते हैं तो कभी अत्यंत भोले। उनकी चंचलता और मासूमियत पाठक के मन में आनंद उत्पन्न करती है।

यशोदा और कृष्ण के संवादों में मातृ-स्नेह का सुंदर चित्रण है। कृष्ण की बाल-सुलभ जिज्ञासा और हठ को सूरदास ने बड़ी कुशलता से व्यक्त किया है।

इन लीलाओं में धार्मिकता के साथ मानवीय भावनाएँ भी जुड़ी हुई हैं। इसी कारण सूरदास का बाल-कृष्ण चित्रण भक्त और सामान्य पाठक दोनों को आकर्षित करता है।

प्रश्न 31. सूरदास के काव्य में गोपियों के प्रेम का स्वरूप बताइए।

उत्तर:

सूरदास के काव्य में गोपियों का कृष्ण के प्रति प्रेम अत्यंत गहरा और समर्पणपूर्ण है। यह प्रेम केवल सांसारिक आकर्षण नहीं बल्कि भक्ति का प्रतीक है। गोपियाँ कृष्ण को अपने जीवन का आधार मानती हैं। उनके लिए कृष्ण से वियोग जीवन की सबसे बड़ी पीड़ा है।

गोपियों के प्रेम में आत्मसमर्पण, विरह, मान, अनुराग और स्मृति जैसी अनेक भावनाएँ दिखाई देती हैं। कृष्ण के मथुरा चले जाने के

बाद उनका विरह अत्यंत तीव्र हो जाता है। वे उद्धव के माध्यम से कृष्ण तक अपने भाव पहुँचाती हैं।

गोपियों की भक्ति में ज्ञान और तर्क की अपेक्षा प्रेम को अधिक महत्व दिया गया है। उनका विश्वास है कि प्रेम से प्राप्त अनुभव ही वास्तविक आध्यात्मिक सत्य है।

सूरदास ने गोपियों के माध्यम से भक्ति के प्रेमप्रधान स्वरूप को प्रतिष्ठित किया। उनका प्रेम भक्त और भगवान के आत्मीय संबंध का सुंदर उदाहरण है।

प्रश्न 32. सूरदास के काव्य में भ्रमरगीत की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

भ्रमरगीत सूरदास के काव्य का अत्यंत महत्वपूर्ण प्रसंग है। इसमें कृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद गोपियों के विरह और उद्धव के साथ उनके संवाद का वर्णन मिलता है। उद्धव गोपियों को ज्ञान और योग का संदेश देते हैं, लेकिन गोपियाँ प्रेम और भक्ति को अधिक महत्वपूर्ण मानती हैं।

गोपियाँ अपने तर्क, व्यंग्य और भावनाओं के माध्यम से उद्धव को उत्तर देती हैं। उनके लिए कृष्ण से प्रेम ही सबसे बड़ा ज्ञान है। विरह के कारण उनके मन में कृष्ण की स्मृति निरंतर बनी रहती है।

भ्रमरगीत में विरह, प्रेम, भक्ति और हास्य-व्यंग्य का सुंदर समन्वय है। गोपियों की वाणी में भावुकता के साथ तर्क की शक्ति भी दिखाई देती है।

सूरदास ने इस प्रसंग के माध्यम से सगुण प्रेम-भक्ति को निर्गुण ज्ञान-योग की अपेक्षा अधिक आत्मीय रूप में प्रस्तुत किया है। भ्रमरगीत उनकी काव्य प्रतिभा का श्रेष्ठ उदाहरण है।

प्रश्न 33. सूरदास की भाषा और शैली का विवेचन कीजिए।

उत्तर:

सूरदास की काव्यभाषा मुख्यतः ब्रजभाषा है। उन्होंने ब्रजभाषा को अत्यंत मधुर, साहित्यिक और प्रभावशाली रूप प्रदान किया। उनकी

भाषा में लोकजीवन की सहजता और काव्य की कलात्मकता दोनों मिलती हैं।

उनकी शैली चित्रात्मक, भावात्मक और संगीतात्मक है। बाल-कृष्ण की लीलाओं का वर्णन करते समय भाषा अत्यंत सरल और चंचल हो जाती है, जबकि विरह के प्रसंगों में वही भाषा करुण और मार्मिक हो जाती है।

सूरदास ने उपमा, रूपक, अनुप्रास, उत्प्रेक्षा आदि अलंकारों का सुंदर प्रयोग किया है। संवाद शैली और पद शैली उनकी विशेषता है।

उनकी भाषा में भावानुकूल शब्द-चयन मिलता है। बाल-लीला के लिए सरल शब्द और विरह के लिए कोमल तथा मार्मिक शब्दों का प्रयोग किया गया है। इस प्रकार सूरदास ने ब्रजभाषा को भक्तिकाव्य की अत्यंत प्रभावशाली भाषा बनाया।

प्रश्न 34. सूरदास के काव्य में कृष्ण का स्वरूप स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

सूरदास के काव्य में कृष्ण बहुआयामी व्यक्तित्व के रूप में दिखाई देते हैं। वे एक ओर बालक हैं तो दूसरी ओर पूर्ण ब्रह्म। बाल रूप में वे नटखट, चंचल और भोले दिखाई देते हैं। यशोदा के लिए वे प्रिय पुत्र हैं और गोपियों के लिए प्रियतम।

कृष्ण का बाल रूप सूरदास के वात्सल्य वर्णन का केंद्र है। उनकी शरारतें, माखन चोरी और बाल-सुलभ व्यवहार पाठक को आकर्षित करते हैं। दूसरी ओर गोपियों के साथ उनका संबंध प्रेम-भक्ति का प्रतीक है।

सूरदास ने कृष्ण के मानवीय और दैवी दोनों रूपों को समन्वित किया है। यही कारण है कि उनका कृष्ण भक्त के अत्यंत निकट दिखाई देता है।

इस प्रकार सूरदास के कृष्ण केवल धार्मिक पात्र नहीं बल्कि प्रेम, वात्सल्य, करुणा और आनंद के केंद्र हैं।

प्रश्न 35. सूरदास के काव्य में गोपियों का विरह-वर्णन कीजिए।

उत्तर:

कृष्ण के मथुरा चले जाने के बाद गोपियों के जीवन में गहरा विरह उत्पन्न होता है। वे कृष्ण की स्मृतियों में डूबी रहती हैं और उनके लौटने की प्रतीक्षा करती हैं। कृष्ण के बिना वृंदावन का प्रत्येक दृश्य उन्हें अधूरा लगता है।

सूरदास ने गोपियों की मानसिक स्थिति को अत्यंत सूक्ष्मता से चित्रित किया है। वे कभी कृष्ण की स्मृतियों को याद करती हैं, कभी उनके व्यवहार को याद करके दुखी होती हैं और कभी उद्धव से कृष्ण के बारे में प्रश्न करती हैं।

उनका विरह केवल सांसारिक प्रेम नहीं बल्कि भक्त और भगवान के बीच की दूरी का प्रतीक है। कृष्ण से मिलन की उनकी इच्छा आध्यात्मिक मिलन की आकांक्षा भी है।

सूरदास ने प्रकृति और संवाद दोनों के माध्यम से विरह को प्रभावशाली बनाया है। गोपियों की वाणी में प्रेम, करुणा, व्यंग्य और समर्पण का सुंदर मेल दिखाई देता है।

प्रश्न 36. सूरदास के काव्य में वात्सल्य और श्रृंगार का समन्वय स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

सूरदास के काव्य में वात्सल्य और श्रृंगार दोनों प्रमुख रस हैं। वात्सल्य में यशोदा और बालकृष्ण के संबंध का चित्रण है, जबकि श्रृंगार में कृष्ण और गोपियों के प्रेम को प्रस्तुत किया गया है।

वात्सल्य पक्ष में कृष्ण की बाल-लीलाएँ, शरारतें, रूठना और माता का स्नेह प्रमुख हैं। दूसरी ओर श्रृंगार में गोपियों का कृष्ण के प्रति आकर्षण, मिलन, मान और विरह का चित्रण मिलता है।

दोनों रसों में प्रेम की भावना मूल आधार है। माता का प्रेम वात्सल्य के रूप में और गोपियों का प्रेम श्रृंगार तथा भक्ति के रूप में अभिव्यक्त होता है।

सूरदास की प्रतिभा यह है कि उन्होंने दोनों भावों को स्वाभाविक और मनोवैज्ञानिक बनाया। इसी कारण उनका कृष्ण कभी प्यारा

बालक तो कभी प्रेम का केंद्र दिखाई देता है। इस समन्वय ने उनके काव्य को अत्यंत समृद्ध बनाया है।

प्रश्न 37. सूरदास की भक्ति-भावना की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

सूरदास की भक्ति सगुण और प्रेमप्रधान है। वे कृष्ण को साकार रूप में स्वीकार करते हैं और उनके बाल, किशोर तथा प्रेमपूर्ण रूपों की उपासना करते हैं। उनकी भक्ति में भगवान और भक्त के बीच आत्मीय संबंध दिखाई देता है।

सूरदास की भक्ति में वात्सल्य, सख्य और माधुर्य भाव प्रमुख हैं। भक्त कृष्ण को कभी पुत्र, कभी मित्र और कभी प्रियतम के रूप में अनुभव करता है। यह संबंध औपचारिक नहीं बल्कि अत्यंत आत्मीय है।

उनकी भक्ति में प्रेम सर्वोपरि है। ज्ञान और कर्म की अपेक्षा प्रेम के माध्यम से भगवान को प्राप्त करना अधिक महत्वपूर्ण है। गोपियों की भक्ति इसका श्रेष्ठ उदाहरण है।

सूरदास की भक्ति में समर्पण, विरह और मिलन की अनुभूतियाँ हैं। इस प्रकार उनकी भक्ति भावनात्मक, प्रेममयी और मानवीय संवेदनाओं से जुड़ी हुई है।

प्रश्न 38. सूरदास के काव्य में मनोवैज्ञानिक चित्रण की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

सूरदास की सबसे बड़ी विशेषताओं में से एक उनकी मनोवैज्ञानिक दृष्टि है। उन्होंने बालकृष्ण के मन, यशोदा के मातृभाव और गोपियों के प्रेम-विरह को अत्यंत सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया।

बालकृष्ण की जिज्ञासा, हठ, शरारत और भोलेपन का चित्रण बाल-मनोविज्ञान की दृष्टि से अत्यंत स्वाभाविक है। यशोदा के मन में पुत्र के प्रति प्रेम, चिंता और कभी-कभी क्रोध का सुंदर समन्वय दिखाई देता है।

गोपियों के प्रसंग में प्रेम, मान, ईर्ष्या, स्मृति और विरह की विभिन्न अवस्थाएँ मिलती हैं। सूरदास इन भावों को केवल बताते नहीं, बल्कि पात्रों के संवाद और व्यवहार के माध्यम से जीवंत करते हैं।

यही मनोवैज्ञानिक गहराई सूरदास को केवल भक्त कवि न रहकर श्रेष्ठ मानव-मन के चित्रकार के रूप में स्थापित करती है।

प्रश्न 39. सूरदास के काव्य में प्रकृति-चित्रण पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:

सूरदास ने प्रकृति का चित्रण मुख्यतः कृष्ण की लीलाओं और गोपियों के प्रेम-विरह के संदर्भ में किया है। वृंदावन की प्रकृति उनके काव्य में अत्यंत जीवंत दिखाई देती है। यमुना, वन, कुंज, पक्षी, ऋतुएँ और फूल कृष्ण की लीलाओं के साथ जुड़े हुए हैं।

गोपियों के विरह में प्रकृति का रूप बदल जाता है। जो प्रकृति पहले आनंद देती थी, वही कृष्ण के अभाव में उन्हें पीड़ित करती है। इस प्रकार प्रकृति पात्रों की मानसिक स्थिति की सहचरी बन जाती है।

सूरदास ने प्रकृति के माध्यम से वातावरण को भावपूर्ण बनाया है। उनकी प्रकृति केवल सजावटी नहीं है बल्कि कथा और भाव को आगे बढ़ाने वाली है।

उनके प्रकृति-वर्णन में लोकजीवन की सहजता और ब्रज संस्कृति की झलक मिलती है। इसलिए सूरदास का प्रकृति-चित्रण उनके काव्य की महत्वपूर्ण विशेषता है।

प्रश्न 40. सूरदास को वात्सल्य रस का सम्राट क्यों कहा जाता है?

उत्तर:

सूरदास को वात्सल्य रस का सम्राट इसलिए कहा जाता है क्योंकि उन्होंने माता-पुत्र के संबंध को अत्यंत स्वाभाविक, मार्मिक और मनोवैज्ञानिक रूप में प्रस्तुत किया है। यशोदा और कृष्ण के संबंध में मातृत्व की लगभग सभी भावनाएँ दिखाई देती हैं।

कृष्ण की बाल-सुलभ शरारतें, माखन चोरी, खेलना, रूठना, शिकायत करना और माता से स्नेह पाना आदि प्रसंग अत्यंत जीवंत

हैं। यशोदा का कभी कृष्ण को डाँटना और फिर उसी क्षण प्रेम से भर जाना मातृत्व की स्वाभाविकता को व्यक्त करता है।

सूरदास ने बालकृष्ण को देवता की तरह दूर नहीं रखा बल्कि सामान्य बालक के रूप में प्रस्तुत किया। इसी कारण पाठक उसके व्यवहार से सहज रूप से जुड़ जाता है।

उनका वात्सल्य वर्णन केवल धार्मिक भावना नहीं बल्कि सार्वभौमिक मातृ-स्नेह की अभिव्यक्ति है। यही उनकी महानता का प्रमुख कारण है।

तुलसीदास — ‘रामचरितमानस’, अयोध्या कांड

प्रश्न 41. ‘रामचरितमानस’ के अयोध्या कांड की प्रमुख विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

‘रामचरितमानस’ का अयोध्या कांड कथा की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है। इसमें राम के वनवास की घटना, दशरथ का दुख, कैकेयी के वरदान, राम की आज्ञाकारिता, लक्ष्मण और सीता का साथ जाना तथा भरत की राम-भक्ति जैसे महत्वपूर्ण प्रसंग हैं।

अयोध्या कांड में पारिवारिक संबंधों और आदर्श चरित्रों का सुंदर चित्रण मिलता है। राम पिता की आज्ञा को सर्वोच्च मानकर राज्य का त्याग कर देते हैं। सीता और लक्ष्मण भी उनके साथ वन जाने का निर्णय लेते हैं। दशरथ पुत्र-वियोग में अत्यंत दुखी होते हैं।

भरत का चरित्र इस कांड की विशेष उपलब्धि है। वे राज्य को स्वीकार नहीं करते और राम की खड़ाऊँ को सिंहासन पर स्थापित करके स्वयं राम के प्रतिनिधि के रूप में शासन करते हैं।

इस प्रकार अयोध्या कांड में त्याग, कर्तव्य, प्रेम, भ्रातृभाव और आदर्श परिवार की भावना का प्रभावशाली चित्रण हुआ है।

प्रश्न 42. राम के चरित्र की प्रमुख विशेषताएँ ‘अयोध्या कांड’ के आधार पर बताइए।

उत्तर:

अयोध्या कांड में राम का चरित्र आदर्श पुत्र, आदर्श भाई और आदर्श मानव के रूप में सामने आता है। पिता के वचन की रक्षा के लिए वे बिना किसी शिकायत के राज्य का त्याग कर वन जाने को तैयार हो जाते हैं।

राम के चरित्र में धैर्य, विनम्रता, त्याग और कर्तव्यनिष्ठा प्रमुख हैं। कैकेयी के प्रति भी उनके मन में कोई दुर्भावना नहीं आती। वे परिस्थितियों को स्वीकार करते हुए परिवार की मर्यादा की रक्षा करते हैं।

राम का सीता और लक्ष्मण के प्रति प्रेम भी अत्यंत आत्मीय है। वे दूसरों के दुख को समझते हैं और सभी के प्रति करुणा रखते हैं।

तुलसीदास ने राम को केवल धार्मिक आदर्श नहीं बनाया बल्कि मानवीय मूल्यों के आदर्श के रूप में प्रस्तुत किया। उनका चरित्र सत्य, मर्यादा, कर्तव्य और त्याग का प्रतीक है। इसी कारण राम भारतीय साहित्य में आदर्श पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित हैं।

प्रश्न 43. भरत के चरित्र की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:

अयोध्या कांड में भरत का चरित्र त्याग, भ्रातृप्रेम और आदर्श शासन का प्रतीक है। जब उन्हें पता चलता है कि राम को वनवास दिया गया है और उनके लिए राज्य प्राप्त हुआ है, तो वे अत्यंत दुखी होते हैं। वे अपनी माता कैकेयी के निर्णय का समर्थन नहीं करते।

भरत राम को वापस लाने के लिए वन जाते हैं। वे राज्य स्वीकार करने से इनकार करते हैं और राम से अयोध्या लौटने का आग्रह करते हैं। राम के न लौटने पर वे उनकी खड़ाऊँ को सिंहासन पर स्थापित करते हैं।

भरत का यह आचरण उनके निष्काम प्रेम और त्याग को दर्शाता है। वे स्वयं को राजा नहीं बल्कि राम का प्रतिनिधि मानते हैं।

तुलसीदास ने भरत के माध्यम से भ्रातृप्रेम की आदर्श भावना प्रस्तुत की है। उनका चरित्र 'रामचरितमानस' के नैतिक और मानवीय आदर्शों को मजबूत करता है।

प्रश्न 44. कैकेयी के चरित्र का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर:

अयोध्या कांड में कैकेयी का चरित्र अत्यंत जटिल है। प्रारंभ में वह राम से प्रेम करने वाली माता के रूप में दिखाई देती है, लेकिन मंथरा के प्रभाव में आकर उसके मन में परिवर्तन आता है। वह दशरथ से अपने दो वरदान माँगती है—भरत के लिए राज्य और राम के लिए चौदह वर्ष का वनवास।

कैकेयी का निर्णय परिवार के लिए दुखद परिणाम उत्पन्न करता है। दशरथ राम-वियोग में प्राण त्याग देते हैं और अयोध्या शोक में डूब जाती है। बाद में भरत भी अपनी माता के निर्णय से दुखी होते हैं।

कैकेयी के चरित्र में मोह, स्वार्थ और भ्रम की प्रवृत्ति दिखाई देती है। हालांकि उसके व्यवहार को केवल व्यक्तिगत दुष्टता के रूप में नहीं देखा जा सकता; मंथरा का प्रभाव भी महत्वपूर्ण है।

तुलसीदास ने कैकेयी के माध्यम से यह दिखाया है कि मोह और गलत सलाह व्यक्ति के निर्णय को प्रभावित कर सकते हैं।

प्रश्न 45. अयोध्या कांड में राम-भरत संबंध की विशेषता स्पष्ट कीजिए।

उत्तर:

राम और भरत का संबंध 'रामचरितमानस' में भ्रातृप्रेम का आदर्श उदाहरण है। राम भरत से अत्यंत प्रेम करते हैं और भरत राम को अपना सर्वस्व मानते हैं। राज्य का प्रश्न भी दोनों भाइयों के प्रेम को प्रभावित नहीं करता।

राम वनवास स्वीकार करते हैं क्योंकि वे पिता के वचन को सर्वोच्च मानते हैं। दूसरी ओर भरत राज्य प्राप्त होने के बावजूद उसे स्वीकार नहीं करते। वे राम को वापस लाने के लिए वन जाते हैं।

राम और भरत के संवादों में प्रेम, त्याग और कर्तव्य का सुंदर समन्वय है। दोनों अपने व्यक्तिगत हित से ऊपर परिवार और धर्म को रखते हैं।

भरत द्वारा राम की खड़ाऊँ को सिंहासन पर स्थापित करना उनके समर्पण का प्रतीक है। इस प्रकार अयोध्या कांड में राम-भरत संबंध भारतीय साहित्य में आदर्श भ्रातृप्रेम की श्रेष्ठ मिसाल प्रस्तुत करता है।

रीतिकालीन काव्य — बिहारी

प्रश्न 46. बिहारी के काव्य की प्रमुख विशेषताओं का वर्णन कीजिए।

उत्तर:

बिहारी रीतिकाल के प्रमुख कवि हैं। उनकी प्रसिद्ध रचना 'बिहारी सतसई' है, जिसमें लगभग सात सौ दोहों के माध्यम से प्रेम, श्रृंगार, नीति और जीवन के विभिन्न अनुभवों को व्यक्त किया गया है।

बिहारी की सबसे बड़ी विशेषता संक्षिप्तता है। वे थोड़े से शब्दों में गहरी और व्यापक अनुभूति व्यक्त करते हैं। उनके दोहे में भाव, भाषा और अर्थ की गहनता दिखाई देती है। इसी कारण उनकी कविता को 'गागर में सागर' कहा जाता है।

उनके काव्य में श्रृंगार रस की प्रधानता है। नायक-नायिका के प्रेम, मिलन, मान, विरह और सौंदर्य का सुंदर चित्रण मिलता है। साथ ही नीति और जीवनानुभव से संबंधित दोहे भी मिलते हैं।

बिहारी ने ब्रजभाषा का अत्यंत कलात्मक प्रयोग किया। उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, श्लेष आदि अलंकारों का सुंदर प्रयोग उनकी कविता की विशेषता है। उनकी काव्य-कला अत्यंत सघन और प्रभावशाली है।

प्रश्न 47. बिहारी के श्रृंगार वर्णन की विशेषताएँ बताइए।

उत्तर:

बिहारी के काव्य में श्रृंगार रस की प्रधानता है। उन्होंने नायक-नायिका के प्रेम को अत्यंत संक्षिप्त लेकिन प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत किया है। उनके दोहों में मिलन, विरह, मान, अनुराग, संकोच और सौंदर्य के विविध रूप मिलते हैं।

बिहारी की विशेषता यह है कि वे बड़े प्रसंग को कुछ शब्दों में व्यक्त कर देते हैं। नायिका की भंगिमा, नेत्रों की चंचलता, मुस्कान, लज्जा और प्रेम के सूक्ष्म संकेतों को वे अत्यंत कुशलता से चित्रित करते हैं। उनके श्रृंगार में बाहरी सौंदर्य के साथ मनोवैज्ञानिक भाव भी दिखाई देते हैं। नायक-नायिका के व्यवहार के माध्यम से प्रेम की विभिन्न अवस्थाएँ सामने आती हैं।

अलंकारों का प्रयोग उनके श्रृंगार को अधिक प्रभावशाली बनाता है। ब्रजभाषा की मधुरता और दोहे की संक्षिप्त संरचना उनके श्रृंगार-वर्णन को विशेष कलात्मकता प्रदान करती है।

प्रश्न 48. बिहारी के दोहों में 'गागर में सागर' की उक्ति क्यों प्रसिद्ध है?

उत्तर:

बिहारी के दोहों की सबसे बड़ी विशेषता उनकी संक्षिप्तता और अर्थ-गहनता है। वे बहुत कम शब्दों में ऐसी व्यापक अनुभूति व्यक्त करते हैं जिसके लिए दूसरे कवि विस्तृत वर्णन करते। इसी कारण उनके काव्य के लिए 'गागर में सागर' की उक्ति प्रसिद्ध है।

एक छोटे से दोहे में वे नायक-नायिका की पूरी स्थिति, उनके मनोभाव, वातावरण और सौंदर्य का संकेत दे देते हैं। उनके दोहों में शब्दों का चयन अत्यंत सावधानी से किया गया है। प्रत्येक शब्द अर्थ की दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

श्लेष, प्रतीक, संकेत और अलंकार उनके दोहों को बहुअर्थी बनाते हैं। पाठक को कम शब्दों के पीछे छिपे अर्थ को समझने के लिए कल्पना और चिंतन दोनों का सहारा लेना पड़ता है।

इस प्रकार बिहारी की काव्य-कला संक्षिप्तता, अर्थ-गहनता और कलात्मक शब्द-विन्यास के कारण विशिष्ट है।

प्रश्न 49. बिहारी की भाषा और अलंकार-योजना पर प्रकाश डालिए।

उत्तर:

बिहारी की भाषा ब्रजभाषा है। उन्होंने ब्रजभाषा को अत्यंत परिष्कृत और कलात्मक रूप प्रदान किया। उनकी भाषा में मधुरता, संक्षिप्तता और अर्थ-गहनता दिखाई देती है।

उनके काव्य में उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, श्लेष, अनुप्रास, अतिशयोक्ति आदि अलंकारों का सुंदर प्रयोग हुआ है। विशेष रूप से श्लेष और संकेत के माध्यम से वे एक ही कथन में अनेक अर्थ उत्पन्न करते हैं।

बिहारी के दोहे में शब्दों का चयन अत्यंत महत्वपूर्ण है। वे अनावश्यक विस्तार से बचते हैं। इसी कारण उनकी भाषा में कसावट दिखाई देती है।

उनकी अलंकार-योजना भावों को सजाने के साथ-साथ अर्थ को गहरा करती है। अलंकार उनके काव्य पर अलग से आरोपित नहीं लगते बल्कि भावों के साथ स्वाभाविक रूप से जुड़े हैं।

इस प्रकार बिहारी की भाषा और अलंकार-योजना रीतिकालीन काव्य की कलात्मकता का श्रेष्ठ उदाहरण है।

प्रश्न 50. बिहारी की काव्य-कला का मूल्यांकन कीजिए।

उत्तर:

बिहारी रीतिकाल के अत्यंत कुशल मुक्तक कवि हैं। उनकी प्रसिद्ध रचना 'बिहारी सतसई' में छोटे-छोटे दोहों के माध्यम से प्रेम, श्रृंगार, सौंदर्य, नीति और जीवनानुभवों की अभिव्यक्ति हुई है।

उनकी काव्य-कला की प्रमुख विशेषता संक्षिप्तता और अर्थ-गहनता है। वे बहुत कम शब्दों में व्यापक भाव व्यक्त करने की क्षमता रखते हैं। नायक-नायिका के सूक्ष्म मनोभावों और सौंदर्य का चित्रण उनकी विशेष उपलब्धि है।

भाषा के स्तर पर ब्रजभाषा का परिष्कृत रूप मिलता है। अलंकारों का प्रभावशाली प्रयोग, शब्द-चयन की कसावट और संकेतात्मकता उनके काव्य को कलात्मक बनाती है।

बिहारी केवल श्रृंगार के कवि नहीं हैं; उनके अनेक दोहों में नीति और जीवन के व्यावहारिक अनुभव भी व्यक्त हुए हैं। उनकी कविता

पाठक को भाव और अर्थ दोनों स्तरों पर प्रभावित करती है। इस प्रकार बिहारी हिंदी के श्रेष्ठ मुक्तक कवियों में महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं।